कृतज्ञता -ज्ञापन

कृतज्ञता ज्ञापित करना भले ही एक औपचारिकता हो, उसकी अनिवार्यता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। कृतज्ञता-ज्ञापन भारतीय संस्कृति की एक विशेषता एवं परम्परा है। इस परम्परा का निर्वहन करते हुए मेरा परम कर्तव्य रहता है की मैं अपने शोध-प्रबंध के अनुसंधान कार्य में सहायक ऐसे व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करती हूं।

सर्वप्रथम परम कृपालु सरस्वती के चरणों में नतमस्तक होकर प्रणाम करती हूं, जिन्होंने मुझे शिक्षा की इतनी उँचाईयों तक पहुँचाया और आज उन्ही की कृपा एवं आशीर्वाद से मैं यह शोध प्रबंध प्रस्तुत कर रही हूं।

मैं गुजराती लोक साहित्य के प्रति अपना कृतज्ञ करती हूं जिन्होंने मुजे शोध विषय के रूप में भवाई लोक नाट्य का चयन करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

शोध प्रबंध पूर्ण हो जाने पर मैं उनका आभार व्यक्त करती हूं, जिनके आशीर्वाद, सहयोग एवं सुझाव से मैं अपने लक्ष्य तक पहूंच सकी हू। इस क्रम में मैं सर्वप्रथम मेरे आध्यात्मिक गुरु पूर्ण पुरषोत्तम सर्वोपरी

श्रीस्वामीनारायण भगवान एवं प्रगट अक्षरब्रह्म साधु केशवजीवनदास (महंत स्वामी) महाराज एवं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं मेरे गुरु प्रो॰ कल्पना गवली एवं विभाग के गुरूजनों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती हूं। जिन्होंने गुजरात के लोकसाहित्य में विशेष रूप से भवाई लोकनाट्य की अपनी कृपापूर्ण स्वीकृति प्रदान करते हुए मुझे प्रोत्साहित किया है। अपने गुरु प्रो. कल्पना गवली जी जिन्होंने मुझे समय समय पर शोध विषय के प्रति मुझे सही रूप से मार्गदर्शन किया एवं जहां समस्या आइ तब गुरु ने अपनी तरफ से पूर्ण रूप से उनकी सहायता एवं आशीर्वाद प्राप्त हुए। उनका निर्देशन मुझे हर समय पर मिलता रहा। मैडम का स्नेह आशीर्वाद हमें हर समस्या में एक नई किरण की रोशनी की रूप में प्राप्त होते रहे है। अपनी विद्यार्थीनी के शोध प्रबंध पूर्ण करने के लिए हर समय पर ज्ञान देते रहे। उनका यह ऋण अपनी पूरे जीवन को सर्मपित करके भी चुका नहीं पाऊंगी। मैं प्रो. दक्षा मिस्त्री जी का भी आभार मानती हूं। विभाग के अन्य प्रोफेसर की भी आभारी हूं। डॉ. मनीषा ठक्कर जी, प्रो. शन्नो पाण्डेय जी, डॉ, मायाप्रकाश पाण्डेय जी, प्रो. कनुभाई निनामा जी एवं पूर्व प्रो. शैलजा भारद्वाज जी की भी में आभारी हूं। यह सब गुरुजन ने हर समय मुझे शोध के अनुसंधान में अपने आशीर्वाद एवं ज्ञान देते रहे।

Scanned with OKEN Scanner

मेरे इस शोधकार्य में मेरे पूजनीय पिताजी डाह्याभाई पढियार एवं मेरे माताश्री पढियार कपिलाबेन कि आभारी हूं। में आज में यहां तक पढाई कर पाइ उनका श्रेय मेरे माताजी एवं पिताजी को जाता है। पिताजी हमेशा मेरे ढाल कवच बनकर मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित किया है। आज यह केवल मेरा नहीं आपितु मेरे माता एवं पिता का स्वपन साकार होने जा रहा हैं। मेरे पूजनीय ममता बहन (सास) पूजनीय अरविंद भाई (ससुर) जिन के सहयोग से आज यह कार्य कर पाई।

मुझे सबसे अधिक सहयोग मेरे पति दिव्येश पटेल का मिला है। उन्होने हर पल मुझे साथ दिया मेरे शोध कार्य के लिए जाने से लेके मेरे हर कागझ जो संभाल के रखने का साथ दिया है। हर पल वह मेरे साया बनके रहे है। मेरे भाई निलेश का भी बहुत बडा योगदान दिया हैं। वह भी मुझे जब कभी संशोधन कार्य हेतु जाना होता था वह सदैव मेरे साथ रहता था। मेरी दीदी अल्पा जी का भी बहुत बडा योगदान दिया है एवं मेरे जीजाजी का भी हर समय पर मुझे साथ दिया हुआ है। मेरे अन्य परिवाजनों कि आभारी हूं। इन सबकी मै आभारी हूं। मेरे मित्र में मनाली जोषी जिन्होंने हर समय पर मुझे पढ़ने के प्रति सजाग किया हैं। अगर में यह भी कह दू के आज उनकी वजह से ही पीएच.डी कर रही हू तो यह बिलकूल सही बात हैं। सच्चे मित्र के रूप में वह हर पल मेरे साथ रही हैं। मेरे दूसरे मित्र मानसी जयस्वाल, तेजस व्यास, भाग्याश्री

बारके, राधव भरवाड यह सभी मित्रों का मुजे हर समय पर साथ मिलता रहा है। मैं उनकि कृतज्ञाति हू। मेरे अन्य शोध छात्र एवं छात्राएं का भी आभार मानती हूं। मेरे शोध कार्य के विषय के अंतर्गत मुझे डॉ. जगदीश भट्ट जी का भी में आभार मानती हूं। भवाई के कलाकार अजय भाई नायक, काली भवाई मंडल, गायत्री भवाई मंडल जो हर समय पर मुझे सहाय करते रहे उनका भी में आभार व्यक्त करती हूं। मेरे एम.फिल के शिक्षकगण का बहुत ही विशेष स्थान हैं। आज उनके आशीर्वाद एवं ज्ञान के वजह से आज यह शोध कार्य मेरा सम्पूर्ण हो रहा है। गुजराती साहित्य अकादमी का भी में आभार मानती हूं। हंसा महेता पुस्तकालय का भी में आभार मानती हूं जहां से समय समय मुझे पुस्तक प्राप्त होती रही हैं। जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहाय की उन सभी की में आभारी हूं। जिनके प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद के लिए मैं सदैव आभारी एवं ऋणी रहूंगी। मैं अंत में प्रस्तुत शोध प्रबंध विद्वानों के समक्ष रखते हुए क्षमायाचना करना चाहती हूं कि यथा संभव सुधार व परिश्रम करने पर भी शोध-प्रबंध में कुछ कमियां अवश्य रह गई होगी, क्योंकि ज्ञान का क्षेत्र असीम है उसमें विस्तार मनन व चिंतन की अनंत संभावनाएं है।

मेरा प्रयास " गुजरात के भवाई लोकनाट्य का सामजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन "को व्यक्त करने का रहा है। यदि यह तत्कालीन समाज एवं

सांस्कृतिक रूप से समझने में थोडा सहायक होगा तो में स्वयं को कृतकृत्य समझूंगी। यह मेरा विनम्र प्रयास है, इसमें किंचित त्रुटियां भी संभव है, आशा है कि विद्वत्जन इनक नगण्य मानकर इस कार्य को स्वीकार करेंगे। अंत में परमपिता एवं गुरु प्रो. कल्पना गवली के चरण में प्रणाम करती हूं।

शोध-छात्रा

पढ़ियार पिनल डाह्याभाई

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बडौदा, गुजरात

Prof. KALPANA GAVLI
Head & Professor
Department of Hindi, Faculty of Arts
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
Vadodara - 390002

Scanned with OKEN Scanner